200% Pass

1. मातृभूमि का स्वरूप कैसे सुशोभित है ?

उत्तर भारत माँ के एक हाथ में न्याय-पताका है, और दूसरे हाथ में ज्ञान-दीप है। जग के रुप को बदलने के लिए कवि भारत माँ से निवेदन कर रहे हैं ।आज माँ के साथ कोटि - कोटि भारत की जनता है । सभी ओर शहर और गाँवों में जय हिन्द का नाद गूँज उठा है । इस तरह मातृभूमि का स्वरुप सुशोभित है।

2. **दूकानदार ने लेखक से क्या कहा ? अथवा दुकानदार सेब बारे में क्या कहा ?**

उत्तर : दूकानदार ने लेखक से कहा कि बाबूजी, बड़े मज़ेदार सेब आए हैं, खास कश्मीर के । आप ले जाएँ, खाकर तबीयत खुश हो जायेगी।

3. कश्मीरी सेब पाठ से हमे क्या सीख मिलती है ?

उत्तर: इस कहानी में बाजार में लोगों के साथ होनेवाली धोखेबाजी पर प्रकाश डाला गया है और खरीदारी करते समय सावधानी बरतने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

4. गिल्लू के प्रति महादेवी वर्मा जी की ममता का वर्णन कीजिए।

उत्तर :काक की चोंचों के दो घाव उस गिल्लू के उस लघुप्राण के लिए बहुत थे। अतः वह निश्चेष्ट-सा चिपका पड़ा था। लेखिका ने गिल्लू को हौले से उठाकर अपने कमरे में लायी । फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सिलिन का मरहम लगाया । कई घंटे के उपचार के उपरान्त उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया गया । फूल रखने की एक हल्की डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया। अंतिम दिनों में पंजे ठंडे हो गये,लेखिका ने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। गिल्लू के प्रति महादेवी वर्मा जी की ममता वात्सल्यमय प्रेम था।

5."प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन"- इस पंक्ति का आशय समझाइए। अथवा मानव का भौतिक साधना का वर्णन कीजिए।

उत्तर: कवि दिनकर जी कहते हैं कि-आज मनुष्य प्रकृति के हर तत्वों पर अपना विजय पा लिया । जैसे पानी,विद्युत,भाप को अपने पैसे में दबा रखा है । पवन तथा ताप पर भी अपना हुक्म चला रहा है।

6. अब्दुल कलाम का बचपन बहुत ही निश्चिंतता और सादगी में बीतने का कारण लिखिए। अथवा जैनुलाब्दिन के बारे में लिखिए।

उत्तर: अब्दुल कलाम के पिताजी आडंबरहीन व्यक्ति थे। सभी अनावश्यक एवं ऐशो-आरामवाली चीज़ों से दूर रहते थे । पर घर में सभी आवश्यक चीज़ें समुचित मात्रा में सुलभता से उपलब्ध थीं । इसलिए अब्दुल कलाम का बचपन बहुत ही निश्चिंतता और सादगी में बीता।

7. पंडित राजकिशोर के मानवीय व्यवहार का परिचय दीजिए।

उत्तर : पंडित .राजकिशोर मजदूरों के नेता थे। वे गरीबों के प्रति हमदर्दी दिखाते थे। मानवीय दृष्टि से उन्होंने बसंत का सामान खरीदा। जब उसको पता चलता है कि बसंत मोटर गाड़ी के नीचे कुचल गया है,तो वह तुरंत डाक्टर को फोन करके बुला लाता है और सारा खर्च खुद भर लेता है। चोट ज्यादा लगने पर एम्बुलेंस बुलाकर उसे अस्पताल में भर्ती कराता है। यह उसके मानवीय व्यवहार का परिचय है।

8. मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान को एक।
पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक॥

भावार्थ :मुखिया मुख के समान होना चाहिए। जिस प्रकार मुँह खाने पीने का काम अकेले करता है,लेकिन वह जो खाता-पीता है उससे शरीर के सारे अंगों का पालन-पोषण करता है। तुलसीदास जी की राय में मुखिया को भी ऐसे ही विवेकवान होना चाहिए कि वह काम अपनी तरह से करें लेकिन उसका फल सभी में बाँटे।

9.दया धर्म का मूल है , पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया ना छांडिए पय , परिहरी वारी विकार॥

भावार्थ : श्री तुलसीदास जी प्रस्तुत दोहे में कहते है कि दया धर्म का मूल है और पाप का मूल अभिशाप है । इसलिए कवि कहते है जब तक शरीर मे प्राण है , तब तक मनुष्य को अपने अभिमान छोड़कर दयालु बने रहना चाहिए।

10. "सोशल नेटवर्किंग" एक क्रांतिकारी खोज है। कैसे?

उत्तर : " सोशल नेटवर्किंग" एक क्रांतिकारी खोज है, जिससे दुनिया भर के लोगों को एक जगह पर ला खड़ा कर दिया है। सोशल नेटवर्किंग के कई साइट्स हैं, जैसे – फेसबुक, आरकुट, ट्विट्टर, लिंकडइन आदि। इन साइटों के कारण देश – विदेश के लोगों की रहन-सहन, वेश-भूषा,खान-पान के अलावा संस्कृति,कला आदि का प्रभाव शीघ्रातिशीघ्र हमारे समाज पर पड़ रहा है।

11. इंटरनेट एक वरदान भी है और अभिषाप भी | कैसे ? समझाइए।

उत्तर : इंटरनेट एक ओर वरदान है तो दूसरी ओर वह अभिशाप भी है। इंटरनेट की वजह से पैरसी, बैंकिंग फ्रॉड, हैकिंग(सूचना/खबरों की चोरी) आदि बढ़ रही हैं। मुक्त वेब साइट,चैटिंग आदि से युवा पीढ़ी ही नहीं बच्चे भी इंटरनेट की कबंधबाँहों के पाश में फँसे हुए हैं। इससे वक्त का दुरुपयोग होताहै और बच्चे अनुपयुक्त और अनावश्यक जानकारी हासिल कर रहे हैं। इसलिए आप लोगों को इंटरनेट से सचेत रहना चाहिए।

12.लेखक को भेजे गये निमंत्रण पत्र में क्या लिखा गया था?

उत्तर :लेखक को भेजे गेये निमंत्रण पत्र में "हम लोग इस शहर में एक ईमानदार सम्मेलन कर रहे हैं। आप देश कप्रसिद्ध ईमानदार हैं। हमारी प्रार्थना है कि आप इस सम्मेलन का उद्घाटन करें। हम आपको आने-जाने कापहले दर्जे का किराया देंगे तथा आवास, भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था करेंगे। आपके आगमन सेईमानदारों तथा उदीयमान ईमानदारों को बड़ी प्रेरणा मिलेगी। ,,

13. लेखक ने कमरा छोड़कर जाने का निर्णय क्यों लिया?

उत्तर :सम्मेलन में लेखक का सामान सब चोरी हो गया था। ताला तक चोरी हो गया था और अब वे बचे थे । लेखक ने सोचा अगर वे वहाँ ज्यादा समय तक रुकेंगे तो उन्हें हीचोरा लिया जायेगा। इसलिए लेखक ने कमरा छोड़कर जाने का निर्णय लिया।

14. लालिम और किंचा लालीदाम जंगल की ओर क्यों चल पड़े ?

उत्तर : लालिम और किंचा लालीदाम नामक दो दोस्तों ने तय किया कि वे मकान बनाएँगे , इसलिए वे पशुओं से पूछ-ताछ करने के लिए जंगल की ओर चल पड़े।

15. समय का सदुपयोग कैसे करना चाहिए ?

उत्तर : समय भगवान का दिया हुआ अनुपम धन है। इसलिए आलस को छोड़कर, बिना किसी बहाने काम करना है। एक क्षण भी नष्ट नहीं करना है। तभी समय का सदुपयोग होगा।

16. साधोराम को क्या हुआ था ?

उत्तर : साधोराम सक्सेना परिवार में वर्षों से काम कर रहा था। अचानक एक दिन चलती बस से गिरकर उसे खतरनाक चोट आ गई। इसलिए उसे अस्पताल में भर्ती करना पड़ा।

17. **धीरज सक्सेना ने घरेलू कामकाज के लिए रोबोट रखने का निर्णय क्यों लिया ?**

उत्तर : साधोराम नामक नौकर धीरज सक्सेना परिवार में वर्षों से काम कर रहा था। अचानक एक दिन चलती बस से गिरकर उसे खतरनाक चोट आ गई। उसे अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। सक्सेना परिवार बड़ा था। बेटे-बेटियों,पोती-पोतों से घर में हमेशा रौनक और चहल-पहल बनी रहती । साधोराम के अस्पताल पहुँच जाने से सभी की तकलीफें बढ़ गई । धीरज सक्सेना से परिवारवालों का यह दुःख नहीं देखा गया । इसलिए परिवार के मुखिया के नाते उन्होंने घरेलू कामकाज के लिए रोबोट रखने का निर्णय लिया।

18.बिछेंद्री का बचपन कैसे बीता ?

उत्तर : बिछेंद्री को बचपन में रोज़ पाँच किलोमीटर पैदल चल कर स्कूल जाना पड़ता था। बाद में पर्वतारोहण-प्रशिक्षण के दौरान उनका कठोर परिश्रम बहुत काम आया । सिलाई का काम सीख लिया और सिलाई करके पढ़ाई का खर्च जुटाने लगी।

19.एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचकर बिछेंद्री ने क्या किया ?

उत्तर : एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचकर बिछेंद्री ने पहले अपने घुटनों के बल बैठी। बर्फ पर अपने माथे को लगाकर सागरमाथे के ताज का चुंबन किया। अपने थैले से हनुमान चालीसा और दुर्गा माँ का चित्र निकाला। उन्हें अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा और छोटी-सी पूजा करके उनको बर्फ में दबा दिया।

20. बिछेंद्री ने पहाड़ पर चढ़ने की तैयारी किस प्रकार की ?

उत्तर : पढ़ाई के साथ-साथ बिछेंद्री ने पहाड़ पर चढ़ने के अपने लक्ष्य को भी हमेशा अपने सामने रखा। इसी दौरान बिछेंद्री ने 'कालनाग' पर्वत की चढ़ाई की। सन **1982** में उन्होंने 'गंगोत्री ग्लेशियर' तथा 'रूड गेरो' की चढ़ाई की जिससे उनमें आत्मविश्वास और बढ़ा। अंग दोरजी के साथ बिछेंद्री ने साउथ कोल से निकले। हल्की-हल्की हवा चल रही थी और ठंड बहुत अधिक थी। उन्होंने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। बर्फ को काटने के लिए फावड़े का इस्तेमाल किया गया। ऊपर चढ़ने के लिए नायलान रस्सी का उपयोग भी किया गया। आक्सीजन का भी उपयोग करते हुए चढ़ाई की।

21. महिला की साहस गाथा पाठ से क्या संदेश मिलता है ?

उत्तर : प्रस्तुत पाठ से छात्र यह संदेश प्राप्त कर सकते हैं कि, महिलाएँ भी साहस प्रदर्शन में पुरुषों से कुच कम नहीं हैं।

बिछेंद्री पाल इस विचार का एक निदर्शन है। ऐसी महिलाओं से प्रेरणा पाकर छात्र साहस गुण, दृढ़ निश्चय, अथक परिश्रम, मुसीबतों का सामना करना इत्यादि आदर्श गुण सीखते हैं। इसके साथ हिमालय की ऊँची चोटियों की जानकारी भी प्राप्त करते हैं। यह पाठ सिद्ध करता है कि 'मेहनत का फल अच्छा होता है।

22.बालकृष्ण अपनी माता से क्या-क्या शिकायतें करता है ?

उत्तर : बालकृष्ण अपनी माता से इस प्रकार शिकायत करता है कि भाई मुझे बहुत चिढ़ाता है। वह मुझसे कहता है कि तुम्हें यशोदा माँ ने जन्म नहीं दिया है बल्कि मोल लिया है। इसी गुस्से के कारण उसके साथ खेलने नहीं जाता।

23.बेंगलूर में कौन-कौन सी बृहत संस्थाएँ हैं ? अथवा बेंगलुरु विश्वव्यापी क्यौं प्रसिध्द है ?

उत्तर:बेंगलूर शिक्षा का ही नहीं,बल्कि बड़े-बड़े उद्योग-धंधों का भी केंद्र है। यहाँ प्रसिद्ध भारतीय विज्ञान संस्थ,एच.ए.एल.,एच.एम.टी .,आइ.टी.आइ.,बी.एच .ई.एल.बी.ई.एल. जैसी बृहत संस्थाएँ हैं। इसलिए बेंगलुरु विश्वव्यापी प्रसिध्द है

24. कर्नाटक की वास्तुकलाऔर शिल्पकला का परिचय दीजिए।

उत्तर:कर्नाटक राज्य की शिल्पकला अनोखी है।बादामी,ऐहोले,पट्टदकल्लु में जो मंदिर हैं, उनकी शिल्पकला और वास्तुकला अदभुत है बेलूर,हलेबीडु,सोमनाथपुर के मंदिरों में पत्थर की जो मूर्तियाँ हैं, वे सजीव लगती हैं। ये सुंदर मूर्तियाँ हमें रामायण,महाभारत,पुराणों की कहानियाँ सुनाती हैं। श्रवणबेलगोल में 57 फुट ऊँची गोमटेश्वर की एकशिला प्रतिमा है,जो दुनिया को त्याग और शांति का संदेश दे रही है।बिजापुर के गोलगुंबज़ की व्हिस्परिंग गैलरी वास्तुकला का अव्दितीय दृष्टांत है।मैसूर का राजमहल कर्नाटक के वैभव का प्रतीक है। प्राचीन सेंट फिलोमिना चर्च, जगनमोहन राजमहल का पुरातत्व वस्तु संग्रहालय अत्यंत आकर्षणीय हैं।

25. कन्नड भाषा तथा संस्कृति को कर्नाटक के साहित्यकारों की क्या देन है?

उत्तर:कर्नाटक के अनेक साहित्यकारों ने सारे संसार में कर्नाटक की कीर्ति फैलायी हैं। वचनकार बसवण्णा क्रांतिकारी समाज सुधारक थे। अक्कमहादेवी,अल्लमप्रभु,सर्वज्ञ जैसे अनेक संतों ने अपने अनमोल"वचनों" व्दारा प्रेम,दया और धर्म की सीख दी है। पुरंदरदास,कनकदास आदि भक्त कवियों ने भक्ति,नीति,सदाचार के गीत गाये हैं। पंप,रन्न,पोन्न,कुमारव्यास,हरिहर,राघवांक आदि ने महान काव्यों की रचना कर कन्नड साहित्य को समृद्ध बनाया है।

26.गाँव को आदर्श कैसे बनाया जा सकता है ?

उत्तर : गाँव को आदर्श बनाने के लिए गाँव की सफाई के लिए गाँव के कई गड्ढों को ढाँप लेना है। गाँव का कूड़ा डालने के लिए एक निश्चित जगह बनाकर तथा गाँव के सभी भाइयों से कूड़ा उसी जगह डालने के लिए कहना है। गाँव को हरा भरा रखने के लिए उसके चारों तरफ पेड़-पौधे लगाना और अपने घरों में भी फलदा पेड़ लगाना है।

27. कविता की पंक्तियों को कंठस्थ करके लिखिए।

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम।

28. शनी को ठंडा ग्रह क्यों कहते है ?

उत्तर ; शनी ग्रह सूर्य से पृथ्वी की अपेक्षा खरीब दस गुना अधिक दूर है, इसी लिए कम सूर्यताप उस ग्रह तक पहुंचता है-पृथ्वी का मात्र सौवां हिस्सा | इसलिए शनी के वायु मंडल का तापमान शून्य के नीचे 150 डिग्रि सेंटीग्रेड के आसपास रहता है | इसलिए शनी एक अत्यंत ठंडा ग्रह है |

29.शनि का निर्माण किस प्रकार हुआ है ?

उत्तर :शनि का निर्माण हाइड्रोजन, हीलियम, मीथेन तथा एमोनिया गैसों से बना है।

30. "सत्य'' क्या होता है? उसका रूप कैसे होता है?

उत्तर :सत्य ! बहुत भोला-भाला, बहुत ही सीधा-सादा ! जो कुछ भी अपनी आँखों से देखा, बिना नमक-मिर्च लगाए बोल दिया- यही तो सत्य है।कितना सरल ! सत्य दृष्टि का प्रतिबिंब है, ज्ञान की प्रतिलिपि है, आत्मा की वाणी है।

31.झूट बोलनेवालों की हालत कैसी होती है?

उत्तर : कभी- कभी झूट बोल देने से कुछ क्षणिक लाभ अवश्य होता है,पर उससे अधिक हानी ही होती है| क्षणिक लाभ विकास के मार्ग केलिए बाधा बन जाता है |व्यक्तित्व कुंठित होता है |झूटबोलने वालें से लोगों का विशवास उठ जाता है | उनकी उन्नती के द्वार बंद हो जाते है

32.किसी कारण देते हुए तीन दिनों की छुट्टी माँगते हुए अपने कक्षा अध्यापक को एक पत्र लिखिए :

प्रेषक,

Xxx

दसवीं कक्षा,
बिसिनीरू मुद्दप्प सर्कारी हाईस्कूल चल्लकेरे
चित्रदुर्ग जिला।

सेवा में,

कक्षा अध्यापक,
बिसिनीरू मुद्दप्प सर्कारी हाईस्कूल चल्लकेरे
चल्लकेरे
चित्रदुर्ग जिला।

महोदय ,

विषय : तीन दिनों की छुट्टि प्रदान करने के बारे में,

सविनय निवेदन है कि, मेरी तबीयत ठीक न होने के कारण मैं दिनांक : : : से दिनांक : : : तक तीन दिनों तक कक्षा में उपस्थित नहीं हो सकती हूँ। इसलिए आप मुझे तीन दिनों की छुट्टि प्रदान करने की कृपा करें।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी छात्र/ छात्रा

33.समय अनमोल है : * प्रस्तवाना * महत्व * आवश्यकता * उपसंहार **प्रस्तावना :** समय का हमारे जीवन में अति महत्वपूर्ण स्थान है समय सभी वस्तुओं से यहां तक कि धन से भी अधिक शक्तिशाली और अमूल्य वस्तु है यदि एक बार ये हमारे हाथ से निकल गया तो फिर यह वापस लौटकर नहीं आता है।

महत्व : समय धन से भी ज्यादा कीमती है; क्योंकि यदि धन को खर्च कर दिया जाए तो यह वापस प्राप्त किया जा सकता है हालांकि, यदि हम एक बार समय को गंवा देते हैं, तो इसे वापस प्राप्त नहीं कर सकते हैं। समय के बारे में एक सामान्य कहावत है कि, "समय और ज्वार-भाटा कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करते हैं।" यह बिल्कुल पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व की तरह ही सत्य है, अर्थात्, जिस तरह से पृथ्वी पर जीवन का होना सत्य है, ठीक उसी तरह से यह कहावत भी बिल्कुल सत्य है। समय बिना किसी रुकावट के निरंतर चलता रहता है। यह कभी किसी की प्रतिक्षा नहीं करता है।

आवश्यकता : हमें जीवन के किसी भी दौर में कभी भी अपने कीमती समय को बिना किसी उद्देश्य और अर्थ के व्यर्थ नहीं करना चाहिए। हमें हमेशा समय के अर्थ को समझना चाहिए और उसी के अनुसार, इसे सकारात्मक ढंग से कुछ उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इसका प्रयोग करना चाहिए। हमें इससे निरंतर कुछ ना कुछ सीखते रहना चाहिए यदि यह बिना किसी रुकावट के चलता रहता है, तो फिर हम ऐसा क्यों नहीं कर सकते।

उपसंहार : जो घड़ी हम हाथ में बांध कर चलते हैं वह हमसे कहती है कि मेरे साथ चलो भले ही आगे चलो पर मेरे से पीछे हो कर नहीं चलना क्योंकि साथ चलने से सदा जीवन सुखी रहता है और समय सोने से भी अधिक मूल्यवान है और इसकी कीमत समय पर ही समझना जरूरी है